बहुपयोगी फसल
रतनजोत

कृषि विभाग, मध्यप्रदेश भोपाल

रतनजोत

भूमि व जलवायु

शुष्क मरूभूमि, रेतीली, बलुई उचित जल निकास वाली पड़ती भूमि, बंजर भूमि इसके लिये उपयुक्त होती है। इसके लिये उष्ण से समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है।

किस्म

अभी तक इसकी कोई विशेष किस्म विकसित नहीं की गई है । इसे जंगलों से एकत्र करके लगाया जाता है । यह खेतों की मेढ़ों पर या बाड़ियों में में पाया जाता हैं ।

खेत की तैयारी

गर्मियों में खेत को अच्छी तरह से जुताई करके कतार से कतार के बीच की दूरी 3 मीटर व गड्ढ़ों के बीच की दूरी 2 मीटर रखते हुए गड्ढे बनाना चाहिए। निकली मिट्टी में गोबर की खाद, पत्तियों की खाद व रासायनिक खाद मिलाकर गड्ढों को भर देना चाहिए। पड़ती भूमि अथवा खेतों की मेढ़ों पर पौधों के रोपण के लिये गड्ढे बनाकर पौधों का रोपण किया जा सकता है। इसके लिये विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं होती है।

बोनी का समय

अक्टूबर–फरवरी तक इसकी कलमों को नर्सरी में लगाते हैं । बीज से इसके पौधे तैयार करने के लिये बीजों को जून–जुलाई में नर्सरी में बोनी करते हैं । लगभग 1–1.5 साल बाद इन कलमों एवं पौधों को जुलाई–सितंबर तक मुख्य खेत में रोपाई करते हैं ।

पौधों की मात्रा

इसकी खेती के लिये 2500 पौधे प्रति हैक्टेयर की आवश्यकता होती है ।

प्रवर्धन

इसका प्रवर्धन बीज एवं कलमों से किया जाता है । कलमों की बोनी जमीन पर क्यारी बनाकर या पालीथीन की थैलियों में करते हैं । कलम लगभग 30–40 से. मी. लम्बी व 2–3 से. मी. मोटी होना चाहिये। लगभग 20–30 दिनों में कलमों में जड़ें आ जाती हैं । इन कलमों को एक साल तक नर्सरी में ही बढ़ने देते हैं जिससे पौधों की ज्यादा देखभाल न करना पड़े ।

रोपने की विधि

तैयार खेत में पौधों की रोपाई करना चाहिए। पौधे लगाने के बाद जमीन को अच्छी तरह से दबा देना चाहिये । जिससे पौधे पानी गिरने पर तिरछे न हों।

खाद / उवर्रक

प्रति गड्ढे 2–3 किलो सड़ी गोबर की खाद देना चाहिये। रासायनिक खादों में 20 ग्राम यूरिया एवं 30 ग्राम सुपर फास्फेट / पौधे को देना चाहिये।

निंदाई

पौधों के बीच अंतरवर्ती फसलें लेने से निंदाई का खर्च कम आयेगा। फसलें बढ़कर नींदा को दबा देगी जिससे उनकी वृद्धि नहीं हो पायेगी। रोपने के बाद 25–30 दिन के बाद आवश्यकतानुसार निंदाई करें।

सिंचाई

पौधे लगाने के बाद यदि वर्षा न हो तो 1–2 दिन में पौधों को पानी देना चाहिये। वर्षा समाप्त होने पर अक्टूबर–नवम्बर व मई–जून में सिंचाई करें। जब पौधे 2 साल के हो जाते हैं तब सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। पानी इस तरह से दें कि खेत में न भरे व भूमि में भी नमी बनी रहे।

कटाई / तुड़ाई

पांचवे वर्ष के बाद फल आना शुरू होते हैं प्रथम तुड़ाई में 2.5 – 10 क्विंटल बीज / है. मिलते हैं। जिनमें लगभग 30 – 40 प्रतिशत तक तेल मिलता है। जैसे–जैसे पौधे बढ़ते जाते हैं, उपज में वृद्धि होती जाती है।

अंतः फसल

इसके खेत में पौधों के बीच की खाली जगह में मुश्कदाना, अश्वगंधा, इसबगोल, कालमेघ आदि की फसल 5 साल तक ली जा सकती है।

आय व्यय

इसकी खेती में लगभग रूपये 8000/हैक्टर का खर्च आता है। अतः फसल से प्रारंभिक वर्षों में कुल आय 15–20,000 रूपये प्रतिवर्ष होगी तथा पांचवे वर्ष बाद इससे 20–25 हजार रूपये प्रतिवर्ष प्राप्त होगें।

उपयोग

यह तेलीय पौधा है। इसके तेल का उपयोग ईधन के रूप में किया जाता है। यह ऊर्जा स्रोत का सशक्त विकल्प है। बीज परगेटिव होता है पेड़ की छाल स्केबीज, एक्जीमा, दाद में उपयोगी होती है। मसूड़े फूलने पर टहनियों की दातौन करते हैं। रतनजोत की अन्य प्रजातियॉ जैसे जेट्रोफा ग्लेन्डुलीफोरा के बीज का उपयोग गठियावात, पक्षाघात, छाले, दाद के उपचार में होता है। जड़ का उपयोग उदर की गड़बड़ी, ग्रन्थियों की सूजन में करते हैं। जड़ व बीज का तेल परगेटिव होता है।

जेट्रोफा गासीपीफोलिया की पत्तियों का उपयोग फोड़ा, एक्जीमा में छाल का उपयोग मेनागेग्यू में पत्ती व बीज परगेटिव होता है। पौधा कैंसर में उपयोगी है। कोष्टा रिक्का कैंसर की प्रचलित दवा है।

जेट्रोफा पोडगेरिका की पत्तियों का दूध चर्मरोग में उपयोगी है। इसे बगीचे में शोभाकारी पौधे के रूप में भी लगाते हैं।

* * * * **

कृषि विभाग मध्यप्रदेश, भोपाल क़.मु.भो./22/10,000/04